रांची विश्वविद्यालय के अंतर्गत पीएच.डी. शोधोपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रारूप

श्रीमद्भगवद्गीता में संचार के तत्त्व: एक समीक्षात्मक अध्ययन

मानविकी संकाय के अंतर्गत

शोध निर्देशिका

प्रो. अर्चना कुमारी दुबे
विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर
संस्कृत विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची।

शोधार्थी

अभिषेक कुमार शास्त्रीलव
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची।

श्रीमद्भगवद्गीता में संचार के तत्त्व: एक समीक्षात्मक अध्ययन

प्रस्तावित शोध की भूमिका:

प्रस्तावित शोध का विषय " *श्रीमद्भगवद्गीता में संचार के तत्त्व: एक समीक्षात्मक अध्ययन* " है। इस ग्रंथ में श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच संवाद का विवरण है। इसके संवाद, संदेश, उपदेश, स्वरूप, तथ्य और तर्क-वितर्क में संचार के कई तत्त्व स्पष्टतः देखे जा सकते हैं । श्रीमद्भगवद्गीता का भारतीय समाज में धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्त्व रहा है। सामाजिक मानविकी के अंतर्गत संचार के विषय के रूप में इसका अध्ययन उपयोगी सिद्ध हो सकता है। प्रस्तावित शोध में कृष्ण - अर्जुन संवाद में निहित संचार के तत्त्वों को प्रमुखता से रेखांकित करने और उजागर करने का प्रयास किया जाएगा। संचार के दृष्टिकोण से गीता के नए पक्ष का परिचय भारतीय ज्ञान परम्परा के विशिष्टता को ही उद्घाटित करने का प्रयास होगा। साथ ही इस ग्रंथ में संचार के अवधारणाओं, सिद्धातों, और संचार की विशेषताओं का समग्र सिंहावलोकन शैक्षणिक दृष्टि से उपयोगी साबित हो सकता है।

प्रस्तावित शोध में श्रीमद्भगवद्गीता के प्रसंगों में संचार के तत्त्वों, उनकी प्रक्रियाओं और उसके परिणामों को समझने का भी प्रयास होगा। साथ ही इसमें संचार के प्राचीन एवं अर्वाचीन सिद्धांतों के साथ भारतीय संचार सिद्धांतों के विश्लेषण का प्रयास किया जाएगा। संचार की वर्तमान प्रचलित अवधारणाओं को श्रीमद्भगवद्गीता में रेखांकित करने के साथ ही यह प्रमाणित करने का प्रयास होगा कि भारतीय संचार परंपरा की धारा इस ग्रंथ में समाहित है।

प्रस्तावनाः

ऐतरेय ब्राह्मण की एक उक्ति है - 'चरैवति, चरैवति' । इसका अर्थ है - चलते रहो, चलते रहो। अर्थात् गतिशील और संचरणशील रहो। गतिशीलता के इस विचार में संचार की भारतीय अवधारणा निहित है। यह विचार इस ओर भी इंगित करती है कि गतिशीलता के कारण संचार जीवन में मुख्य भूमिका निभाता है। यह सिद्ध करता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा के दृष्टिकोण से संचार वर्तमान खोज और विकास न होकर चिरन्तन तथा शाश्वत अवधारणा रही है।

हालाँकि प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा में संचार की पृथक विषय के रूप में मान्यता नहीं रही है। फिर भी कई ग्रंथों और उपनिषदों में संवाद व्यवहार की प्रक्रिया और नियम परिनियम की भी उदाहरण मिलते हैं। भारतीय संचार परम्परा में 'सत् संवाद' के लिए वेद और उपनिषदों में कई महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त सामने आते हैं। इन सिद्धातों में सत्य बोलना, प्रिय बोलना तथा असत्य और अप्रिय नहीं बोलने जैसे विचार प्रमुखता से स्थापित किए गए हैं। इन पौराणिक विचारों में संवाद की सदाचारिता, तथ्यों की सार्थकता और सत्यता पर बल दिया जाता है। संवाद का नैतिक मूल्यांकन भी इन्हीं मानकों को आधार मानकर किया जाता रहा है। संचार और संवाद के ये तत्त्व भारतीय ज्ञान परम्परा तथा संप्रेषण परम्परा के तहत अब अध्ययन व्यवहार में शामिल किए जा रहे हैं।

शोध प्रस्तावना को निम्न चरणों से स्पष्ट किया जा सकता है-

1. संचार की प्रक्रिया और श्रीमद्भगवद्गीता

भारतीय ज्ञान परम्परा की उपरोक्त अवधारणा के अंतर्गत ही श्रीमद्भगवद्गीता में संचार के सिद्धांतों और प्रक्रियाओं के विवरण को जा सकता है। इस ग्रंथ में ध्यान, भक्ति, कर्म और ज्ञान के जो विषय आए हैं उनमें संचार सिद्धांत, प्रक्रिया और भेदों का विवरण मिलता है। शोध का उद्देश्य इन्हीं तथ्यों को प्रमुखता से रेखांकित करना और उजागर करना है। इन तथ्यों को संचार के सिद्धांत और अवधारणा तथा संचार के विभिन्न चरणों की व्याख्या से समझा जा सकता है। संचार की पूरी प्रक्रिया में संचार कर्ता, संदेश, माध्यम, संदेश प्राप्तकर्ता और प्रतिपुष्टि जैसे भिन्न चरण शामिल होते हैं। इन चरणों के अंतर्गत गीता का भी मूल्यांकन किया जा सकता है। इस आधार पर गीता संवाद में संचारकर्ता के रूप में कृष्ण, उनके उपदेश गीता के संदेश तत्त्व, अर्जुन संदेश प्राप्तकर्ता और प्रतिपुष्टि देने वाले श्रोता के रूप में हैं। निम्नलिखित रेखाचित्र से गीता के संवाद में संचार की प्रक्रिया को समझा जा सकता है।

श्रीकृष्ण (संदेशकर्ता) → गीता विवरण (संदेश) → अर्जुन (संदेश प्राप्तकर्ता)

↑ ← प्रतिपुष्टि (अर्जुन के प्रश्न प्रतिक्रिया) ← ↓

2. संचार की प्रक्रिया और श्रीमद्भगवद्गीता

संवाद की उपरोक्त प्रक्रिया से श्रीमद्भगवद्गीता में द्विचरणीय संचार प्रवाह के प्रारूप को समझा जा सकता है। पाश्चात्य संचार शास्त्री पाल लेजर्स फिल्ड के

अनुसार आमने-सामने के संवाद में सूचना का प्रसारण काफी प्रभावी होता है। इस तरह के संचार में संदेशकर्ता और संदेशप्राप्तकर्ता के बीच एक साझा समझदारी उत्पन्न होती है। श्रीमद्भगवद्गीता में भी कृष्ण - अर्जुन के मध्य जो संवाद हो रहा है वह इसी तरह के द्विचरणीय संचार व्यवस्था है। इस संचार प्रवाह में श्रीकृष्ण (स्त्रोत) द्वारा प्रेषित सूचना सीधे अर्जुन (श्रोता) को प्राप्त हो रहा है। साथ ही द्विचरणीय संचार में 'विचारेता' या 'ओपीनियन लीडर' की भूमिका को बेहद महत्त्वपूर्ण माना जाता है। वह संदेश को श्रोता तक बेहतर ढंग से पहुँचाने और उसके साथ तालमेल बैठाने का प्रयास करता है। इस आधार पर श्रीकृष्ण को भी ओपीनियन लीडर की भूमिका में देख सकते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता के सम्पूर्ण उपदेश / संदेश में वे संवाद का नेतृत्व करते हैं । अर्जुन इन संदेशों को आत्मसात कर लें इसके लिए कई तरह के उदाहरणों को संवाद में प्रस्तुत करते हैं। साथ ही सिर्फ भाषा और अभिव्यक्ति ही नहीं प्रतीकों को भी संवाद या संचार का अभिन्न अंग माना जाता है। इस आधार पर गीता में कई संकेत मिलते हैं जो संचार के प्रतीकों को प्रदर्शित करती हैं। इस ग्रंथ में जिस तरह श्रीकृष्ण को सारथी के रूप में निरूपित किया गया है वह बताता है कि वे संचार का नेतृत्व करते हुए सही मार्ग में रखने का प्रयास भी कर रहे हैं। इस तरह उनके सारथी की छवी 'ओपीनियन लीडर' का ही प्रतीक है।

3. संचार के भेद और श्रीमद्भगवद्गीता

संचार को कई प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है। सामान्य तौर पर मौखिक, सांकेतिक, दृश्य और श्रवण के रूप में संचार के भेद किए जाते हैं। इसके

अतिरिक्त तकनीकी व गैरतकनीकी संचार, मध्यस्थ और सीधा संचार, तथा सहभागी एवं सहभागिताहीन संचार में भी इसका विभाजन किया जाता है। इनमें अधिकतर शैक्षणिक आवश्यकताओं के लिए ही है। संचार के विभिन्न भेदों के आधार पर भी श्रीमद्भगवद्गीता में संचार के तत्त्वों का अध्ययन किया जा सकता है। वर्तमान में प्रचलित सिद्धांतों के तहत श्रोता आधारित संचार के चार प्रकार बतलाए गए हैं 1. अन्तः वैयक्तिक संचार, 2. अन्तरवैयक्तिक संचार, 3. समूह संचार, और 4. जनसंचार । श्रोता आधारित यह विभाजन विश्व भर में संचार के अध्ययन और अध्यापन में -

पाठयक्रमों में शामिल है। इस शोध में इन्हीं भेदों के आधार पर श्रीमद्भगवद्गीता में संचार के तत्त्वों का परीक्षण किया जाएगा।

श्रीमद्भगवद्गीता के कृष्ण-अर्जुन संवाद में संचार के उपरोक्त चार प्रकारों में से दो भेदों के लक्षण स्पष्टतः देखे जा सकते हैं। पहला अन्तः वैयक्तिक संचार और दूसरा अन्तर वैयक्तिक संचार । कृष्ण और अर्जुन के बीच संवाद इन दो संचार प्रकारों का प्रबल उदाहरण है। संचार के इन भेदों के साथ गीता के संबंध को समझा जा सकता है।

अंतः वैयक्तिक संचार में व्यक्ति स्वयं से ही संचार करता है। यह आत्मनिरीक्षण, आत्म अवलोकन और अंतःकरण से संबद्धित संचार है। इसमें स्वयं से और मानसिक विचारों के साथ संवाद व्यवहार की प्रक्रिया होती है। इसे आभ्यन्तर संचार भी कहते हैं। मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ और मन इस संचार के कारक विषय हैं। गीता के कर्मयोग में कृष्ण निरंतर इन इन्द्रियों के साथ अंतःकरण के

विषय मन, बुद्धि और चित्त के नियंत्रण की चर्चा अर्जुन से करते हैं। अंतः व्यैक्तिक संचार के सिद्धातों के अनुसार संचार का अर्थ मात्र सूचनाओं का आदान-प्रदान करना ही नहीं है। इसका अर्थ मात्र संकेतों के द्वारा अभिव्यक्तियों का सम्प्रेषण करना भी नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ है विचारों, भावों और संवेदनाओं के साथ अलौकिक शक्ति से लौकिक मानव तक संवाद करना । अर्थात् आत्मसंप्रेषण भी संचार ही है जो स्व प्रेरणा का प्रमुख कारक होता है। कृष्ण जब अर्जुन को आत्म अवलोकन, आत्मानुभूति और आत्मचिंतन करने की बात कहते हैं तो वह अंतः वैयक्तिक संचार की स्थापित करने को प्रेरित करते हैं। गीता में संचार के इस भेद के होने का यह एक उत्कृष्ट उदाहरण होने संकेत देता है।

वहीं संचार का दूसरा भेद जिससे गीता जुड़ा है वह है अंतरवैयक्तिक संचार । इसे दो लोगों के बीच सीधे होने वाले संवाद के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह बिना किसी के मध्यस्थता के आत्मीय, सीधा और परस्पर भाव-भंगिमाओं के साथ सम्पन्न होता है। श्रीमद्भगवद्गीता में भी कृष्ण - अर्जुन संवाद दो लोगों के मध्य का ही संचार है । यह संवाद विचरणीय संचार और अंतरवैयक्तिक संचार के कई विशेषताओं का पालन करती है। इस संचार में श्रोता (अर्जुन) द्वारा प्रतिपुष्टि (फीडबैक) संवादकर्ता (कृष्ण) तक शीघ्रता से पहुँच रहा है। अर्जुन कई बार प्रश्न और प्रतिप्रश्न कर संवाद में अपनी प्रतिपुष्टि देते हैं। संप्रेषण के इस भेद की व्याख्या से भी स्पष्ट होगा कि गीता में संचार के तत्त्व हैं।

शोध, संचार की दृष्टि से गीता को समझने का प्रयास और इसके विभिन्न आयामों को समझने का प्रयत्न है। कृष्ण-अर्जुन संवाद संचार की अंतः वैयक्तिक और

अंतर वैयक्तिक अवधारणा के तहत कई विचारों की पुष्टि करती है - अंतर वैयक्तिक संचार के तीन स्तर हैं- पहला, सामाजिक संबोध स्तर, दूसरा व्यक्तिगत स्तर और तीसरा आत्मीय स्तर । कृष्ण, अर्जुन को अपने तर्कों के माध्यम से सामाजिक, व्यक्तिगत और आत्मीय स्तर पर संदेश संप्रेषित करते हैं । सामाजिक संबोध में जहाँ सामान्य बातचीत के साथ संवाद आरम्भ होता है वहीं व्यक्तिगत स्तर पर संवाद के अंदर मित्रता गहराती है और आत्मीय स्तर में संवाद के अंदर भावनाएँ कहीं ज्यादा गहरी हो जाती हैं। गीता के अंदर भक्ति योग, कर्मयोग और ज्ञानयोग के वर्गीकरण में अंतर वैयक्तिक संचार के इन तीनों स्तरों का विस्तार देखा जा सकता है।

साथ ही अंतर वैयक्तिक संचार का एक विभाजन केंद्रित और विकेन्द्रित संचार के रूप में भी किया जाता है। केंद्रित संचार में जहाँ संवाद विषय पर केंद्रित होता है वहीं विकेन्द्रित में यह दूसरे विषयों पर भी संवाद आगे बढ़ता है। गीता में कृष्ण - अर्जुन को संदेश और उपदेश के साथ कई अन्य प्रसंगों के साथ भी अपनी बात समझाने का प्रयास करते हैं जिससे यह संवाद केंद्रित और विकेन्द्रित होता है।

4. श्रीमद्भगवत गीता में साधारणीकरण की अवधारणा

संचार दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य, विचारों, सूचनाओं, अनुभूतियों और ज्ञान का प्रभावकारी आदान-प्रदान है। इसमें संचारकर्ता और प्राप्तकर्ता के मध्य एक साझेदारी होती है। इसमें सूचना देने वाले प्रेषक जिस अर्थ को सम्प्रेषित करते हैं, सूचना ग्रहण करने वाले भी उसी अर्थ में यदि ग्रहण कर लेते हैं, तो वह वास्तविक संचार कहलाता है। पाश्चात्य संचार विद्वान डैनिस मैक्केल के अनुसार

संचार वह प्रक्रिया है जो दोनों पक्षों में समान बिन्दुओं की वृद्धि करता है, लेकिन वह प्रक्रिया तभी संभव है जब दोनों पक्षों में पहले से ही कुछ समान तत्त्व मौजूद हों। संचार की भारतीय परम्परा में यही विचार 'साधारणीकरण' के रूप में मौजूद है। इस अवधारणा के अंतर्गत साधारणीकरण वह सामाजिक प्रक्रिया है जो सहृदयों में उत्पन्न की जा सकती है। श्रीमद्भगवद्गीता में कृष्ण अर्जुन को कर्मयोग, सांख्ययोग और ध्यानयोग में समता, समाधि, समत्व बुद्धि, समत्व दृष्टि और समतत्व भाव के साथ इसी साधारणीकरण को स्थापित करने का संदेश देते हैं। इस प्रकार सम्प्रेषण के द्वारा दो व्यक्तियों में सार्थकता का निर्माण होता है। संचार व्यक्तियों के व्यवहारों को भी प्रभावित करता है ।

विषय की मौलिकता और महत्व:

अब तक श्रीमद्भगवद्गीता की धार्मिक और आध्यत्मिक स्तर पर कई व्याख्याएँ और टिप्पणियां की गई हैं। गीता पर विश्वभर में कई मतों और कई भाषाओं में अनेकों व्याख्यान, भाष्य, टीकाएं उपलब्ध हैं। भारतीय वांग्मय में गीता की व्याख्या, अनुवाद और भाष्य की लम्बी शृंखला कई भाषाओं में रही है। शंकराचार्य से लेकर श्रीलप्रभुपाद तक कई संतों ने इसके भाष्य किए हैं। महात्मा गाँधी, विनोबा भावे, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और अरविंदो तक ने कई विद्वानों ने गीता पर टिप्पणीयाँ लिखी हैं। इन सब की सूची काफी लम्बी है। सभी भाष्य और व्याख्याएं किसी मत या विचारधारा के साथ गीता की आध्यात्मिक संतति को समझने और लोक मानस को समझाने का ही उपक्रम रहा है। यह श्रीमद्भगवद्गीता का ही

महात्म्य है कि एक पुस्तक से सैकड़ों व्याख्याएँ लिखी गईं। इस शोध में श्रीमद्भगवद्गीता के संवाद को संचार की दृष्टि से देखते हुए इसकी तकनीकी व्याख्या एक नए पहलू को सामने लाने का प्रयास होगा। गीता में संचार के तत्त्वों की अवधारणा ही प्रस्तावित शोध की मौलिकता और विशिष्टता होगी। गीता के इस नए आयाम से भारतीय ज्ञान परम्परा और संचार परम्परा का पक्ष थोड़ा दृढ़ होगा ऐसा विश्वास है । इस दृष्टिकोण से संचार के अध्ययन प्रस्तावित शोध का महत्त्व हो सकता है यह उम्मीद भी प्रबल होती है।

सफल संचार का महत्त्वपूर्ण गुण यह है कि संदेश के अनुसार श्रोता के व्यवहार में परिवर्तन हो । संचार में संदेश तो संचारकर्ता ने प्रसारित कर दिया लेकिन संदेश प्राप्त करने वाले प्रापक पर संदेश का प्रभाव पड़ा या नहीं यह श्रोता के व्यवहार से ही पता चल सकता है। संचार की सफलता संदेश के अनुसार श्रोता के व्यवहार करने में ही माना जाता है । इस दृष्टिकोण से भी कृष्ण - अर्जुन संवाद सफल संचार के इस लक्ष्य को पूर्ण करता है। अर्जुन, कृष्ण के संदेश में निहित उपदेश से सहमत होकर कृष्ण के विचारों को आत्मसात् करते हैं। संवाद के अंत में अर्जुन प्राप्त संदेश के अनुरूप ही व्यवहार करते हैं । इस तरह गीता संचार की एक और व्याख्या की पुष्टि करता है। उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है की श्रीमद्भगवद्गीता में संचार के पर्याप्त तत्त्व हैं।

शोध का उद्देश्य एवं प्रेरणा:

जनसंचार और पत्रकारिता के अध्ययन के दौरान ही यह अनुभव हुआ कि पाश्चात्य संचार सिद्धांतों का अध्ययन भारतीय संचार परम्पराओं के शोध के लिए

महत्वपूर्ण है। यह जानकर एक अफसोस हुआ कि भारतीय संचार परम्पराओं का जनसंचार पाठ्यक्रमों में अभाव है। जबकि वैदिक साहित्य में संवाद तथा

संप्रेषण के तत्त्व और प्रक्रिया के उदाहरण मिलते हैं। एक सदी का वक्त भी नहीं हुआ कि विश्व के अनेक देशों में संचार को एक विषय के रूप में मान्यता दी जा रही है। सामाजिक मानविकी के अंतर्गत यह नवीन विषय के रूप में शामिल है। संचार के पाश्चात्य सिद्धांतों ने इस विषय के अध्ययन-अध्यापन को विगत सात-आठ दशकों में लोकप्रिय बनाया है। विश्व के सभी देशों में इन्हीं सिद्धांतों के साथ संचार के अध्ययन की स्थापना हुई। भारत में भी स्वतंत्रता के बाद साठ के दशक से अध्ययन हो रहा है। इतने समय में भी जनसंचार के पाठ्यक्रमों में भारतीय संचार परम्पराओं को वह स्थान नहीं मिल पाया है जो मिलना चाहिये था। श्रीमद्भगवद्गीता में संचार के तत्त्वों का अनुसंधान ही इस शोध का मुख्य उद्देश्य है। पत्रकारिता और जनसंचार का अध्ययन तथा घर में माँ - पिताजी से धार्मिक संस्कार भी इस शोधकार्य करने के लिए प्रेरणा का एक विषय बना ।

शोध परिकल्पनाएं:

श्रीमद्भगवद्गीता श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच संवाद का विवरण है। यह संवाद अंतर वैयक्तिक संचार के सिद्धांतों के साथ व्यवहारिक समानता रखता है । इस पूरे संवाद में संचार के विभिन्न तत्त्वों को प्रमुखता से रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। इस पृष्ठभूमि में प्रस्तावित शोध मुख्यतः निम्न परिकल्पनाओं को समेटता है-

1. गीता के संवाद विवरण, संदेश और उपदेश में संचार के कई तत्त्व स्पष्टतः देखे जा सकते हैं।

2. गीता में संचार की प्रक्रिया संवादकर्ता-संदेश -माध्यम - प्राप्तकर्ता - प्रतिपुष्टि का प्रबल प्रमाण हैं ।

3. गीता में अंतः वैयक्तिक संचार के गुणों शब्द, वाक्, करण और इन्द्रियों की प्रचुर व्याख्या है।

4. श्रीमद्भगवद्गीता में सामाजिक, व्यक्तिगत और आत्मीय संचार के स्तर मिलते हैं।

5. गीता का संवाद विचरणीय संचार का श्रेष्ठ उदाहरण है।

6. गीता संवाद में श्री कृष्ण की भूमिका 'ओपीनियन लीडर' के रूप में है।

7. गीता में संचार की भारतीय परम्परा 'साधारणीकरण' की व्याख्या देखी जा सकती है।

8. कृष्ण-अर्जुन संवाद में प्रतिपुष्टि का विश्लेषण और उसके अनुरूप संवाद में परिवर्तन होता है।

9. कृष्ण, अर्जुन को प्रेषित संदेशों में 'मास लाइन कम्यूनिकेशन' के अनुसार सूचना देते हैं।

10. गीता के संवाद में संचार की सफलता के प्रमाण मिलते हैं।

शोध विधिः

प्रस्तावित शोध पूर्णतः वैज्ञानिक शोध विधि पर आधारित होगा । शोध की इस प्रक्रिया में विवरणात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधियों का प्रयोग किया जाएगा। शोध सामग्री हेतू पुस्तकों, पुस्तकालयों, विभिन्न संचार तंत्रों आदि की सहायता ली जाएगी। श्रीमद्भगवद्गीता पर लिखे गए महत्त्पूर्ण भाष्यों और संचार पर लिखे गए प्रमुख पुस्तकों के अध्ययन से शोध को तथ्यपरक बनाया जाएगा।

शोध से संबंधित सभी तथ्यों, साक्ष्यों / साम्रगियों को तर्क की कसौटी पर कस कर ही प्रस्तुत किया जाएगा। वैज्ञानिक तथा बौद्धिक आधार पर परख कर तथा आवश्यकतानुसार विशेषज्ञों की सहायता लेकर ही इस चुनौतीपूर्ण शोध विषय पर निष्पक्ष निर्णय लिया जाएगा। पूरी शोध प्रक्रिया यथासंभव पक्षपातपूर्ण रहेगी तथा अपने निष्कर्ष पर पहुँचेगी।

शोध प्रारूप और शोध का अध्यायीकरण

प्रथम अध्यायः संचार की अवधारणा, सिद्धांत और प्रकार

1.1 संचार की अवधारणा और महत्त्व

1. 2 संचार का मानविकी विषय से सम्बन्ध

1.3 संचार की प्रक्रिया और प्रकार

1.4 संचार की भारतीय परम्पराएँ

द्वितीय अध्यायः श्रीमद्भगवद्गीता: संचारिय वैशिष्टय एवं महात्म्य

2.1 श्रीमद्भगवद्गीता परिचय और महात्म्य

2.2 गीता संवाद का संचारिय वैशिष्टय

2. 3 गीता में संचार की प्रक्रिया

2.4 भक्ति, कर्म और ज्ञान योग के संचारिय विषय

तृतीय अध्यायः श्रीमद्भगवद्गीता में अंतः वैयक्तिक संचार

3.1 गीता में अंतः वैयक्तिक (आभ्यन्तर) संचार की अवधारणा

3.2 गीता में अंतःवैयक्तिक संचार की प्रक्रियाएँ

3. 3 गीता में आत्मसंचार के विभिन्न विषय

3.4 गीता के विभिन्न योगों में आभ्यन्तर संचार

चतुर्थ अध्यायः अंतर वैयक्तिक संचार और श्रीमद्भगवद्गीता

4.1 गीता में अंतर वैयक्तिक संचार

4.2 गीता संवाद का सामाजिक संबोध स्तर

4.3 गीता संवाद का व्यक्तिगत संबोध स्तर

4.4 गीता संवाद का आत्मीय संबोध स्तर

पंचम अध्यायः संचार की भारतीय परम्परा और श्रीमद्भगवद्गीता

5.1 गीता में संचार की भारतीय परम्पराएँ

5. 2 गीता में साधारणीकरण

5.3 गीता में संचार का नैतिक मूल्य और महत्त्व

षष्टम अध्यायः गीता में संचार के अन्य तत्त्व

6.1 ओपीनियन लीडर, के रूप श्रीकृष्ण

6.2 श्रीकृष्ण का 'मास लाइन' और गेटकीपिंग संचार

6.3 गीता के विभिन्न प्रतीकों में संचार

6.4 गीता में प्रतिपुष्टि और प्रभावी संचार

सप्तम अध्याय : निष्कर्ष

7.1 गीता संचार की पूर्णता

7.2 शोध निष्कर्ष

7.3 उपसंहार

संदर्भ सूची

1. संचार के मूल सिद्धांत, ओम प्रकाश सिंह, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली
2. सम्प्रेषण प्रतिरूप एवं सिद्धांत, डॉ. श्रीकांत सिंह
3. भारत में जनसंचार, केवल जे कुमार, जायको दिल्ली
4. संचार के मूल सिद्धान्त, प्रो. ओमप्रकाश सिंह, लोक भारती, दिल्ली
5. संचार शोध और मीडिया, धनंजय चोपड़ा, लोक भारती, दिल्ली
6. संस्कृति विकास और संचार क्रांति, पूरनचंद्र जोशी, ग्रंथशिल्पी, दिल्ली
7. श्रीमद्भगवत गीता शंकर भाष्य, शंकराचार्य, गीता प्रेस गोरखपुर
8. गीता-चिन्तन, हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रेस गोरखपुर
9. साधक संजीवनी, हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रेस गोरखपुर
10. गीता तत्त्व विवेचनी, जयदयाल गोयंदका, गीता प्रेस गोरखपुर
11. श्रीमद्भगवत गीता, यथारूप श्रीलप्रभुपाद, इस्कान
12. ईश्वर - अर्जुन संवाद, परमहंस योगानंद, योगदा सत्संग सोसाइटी
13. गीता परिक्रमा, विष्णुकांत शास्त्री, कुमार सभा, कोलकात्ता
14. गीता बोध, महात्मा गांधी, सर्वोदय साहित्य इलाहाबाद
15. गीता ज्ञान प्रवेशिका, गीताप्रेस गोरखपुर
16. गीता प्रवचन, आचार्य विनोबा भावे, सस्ता साहित्य मंडल इलाहाबाद
17. गीता रहस्य, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, मुम्बई वैभव प्रेस, बम्बई
18. गीता माता, महात्मा गाँधी, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली
19. यथार्थ गीता, स्वामी अड़गड़ानन्द, आश्रम, मुम्बई
20. शरणम्, नरेन्द्र कोहली, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
21. श्रीकृष्ण उवाच्, सं. शकुंतला मिश्रा, सेतु प्रकाशन, दिल्ली

शोध प्रस्तावक

अभिषेक कुमार शास्त्री